

नौकरी की किताब

सत्र 13: संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 13, संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14 है।

अय्यूब का विलाप (अय्यूब 3) [00:27-6:10]

अध्याय चार में संवाद गंभीरता से शुरू होते हैं। अध्याय तीन में अय्यूब का विलाप है, जो इस पूरे खंड का शुभारंभ करता है। पुस्तक की संरचना में, अय्यूब के विलाप को पुस्तक के अंत में भगवान के भाषणों के प्रति उसकी दो प्रतिक्रियाओं के समानान्तर किया जा सकता है। फिर, वे अलग हो गए हैं, और वे इतने लंबे समय के करीब नहीं हैं, लेकिन वे पुस्तक में एक समान संतुलन भूमिका निभाते हैं। लेकिन यहां अय्यूब का विलाप संवाद खोल रहा है।

अय्यूब अपने जन्म के दिन को कोसते हुए विलाप का पहला भाग शुरू करता है। अब, फिर से, हमें यहाँ "अभिशाप" शब्द मिलता है, लेकिन यह एक अलग शब्द है। यह " *बराक* " शब्द नहीं है, भला हो कि यह व्यंजनात्मक ढंग से काम कर रहा है। इस्तेमाल किया जाने वाला हिब्रू शब्द *क्रलाल* है, जिसमें शक्ति के शब्द के साथ जादू शामिल है। इसलिए, वह अपने जन्म के दिन के विरुद्ध एक मंत्र का उपयोग कर रहा है। वह 3.8 में उस दिन को शाप देने के लिए कहता है; वह एक अलग शब्द है. तो, "अभिशाप" के लिए तीन अलग-अलग शब्द। व्यंजना में *बराक*, *क्रलाल* शक्ति के शब्दों के साथ एक मंत्र है, लेकिन फिर दिन को शाप देता है '*अरार*', और इसका तात्पर्य भगवान की सुरक्षा से कुछ हटाने, व्यवस्था में व्यवधान है। वह '*अरार*' है। तो, ये तीन शब्द, भले ही इन सभी का अनुवाद "अभिशाप" किया गया हो, उनकी अलग-अलग बारीकियाँ हैं, और वे अलग-अलग तरीके से काम करते हैं।

वह लेविथान को जगाने के बारे में भी बात करते हैं। यह दैवीय विशेषज्ञों द्वारा किया गया कुछ काम होगा जो ऐसी चीजों में हाथ आजमाएंगे। लेविथान, फिर से, गैर-व्यवस्था की दुनिया, अराजकता की

दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है। चूँकि अय्यूब अराजकता का अनुभव कर रहा है, इसलिए वह लेविथान को उसके जन्म के दिन के प्रति जागृत करने के विचार का आह्वान करता है।

अपने विलाप के दूसरे भाग में वह इच्छा व्यक्त करता है कि उसका कभी जन्म ही न हुआ हो। उसकी इच्छा होती है कि वह गर्भ से सीधे पाताल लोक में चला जाता, या मृत बच्चे की तरह होता, या गर्भपात हो जाता। इसलिए, वह चाहता है कि पाठ के प्रकटीकरण में उसके पास जो कुछ है उसका अनुभव करने के बजाय वह स्वयं ऐसा करे। और अंत में, इस विलाप के अंतिम भाग में, वह अपने वर्तमान जीवन के दुख की ओर मुड़ता है, वह अब क्या अनुभव कर रहा है, और यह उसके लिए कितना कठिन है।

निःसंदेह, यह विलाप अय्यूब के लिए जैसा वह इसे देता है और हमारे लिए जैसे हम इसे सुनते हैं, आत्मा को पीड़ा देने वाला है। पाठक कभी-कभी इसका वास्तविक संबंध पा सकते हैं कि अय्यूब कैसा महसूस करता है कि उसका जीवन कितना भयानक हो गया है। अलंकारिक दृष्टिकोण से, यह शैली में बदलाव के माध्यम से प्रस्तावना और भाषणों के बीच संक्रमण का निर्माण करता है, कथा और प्रस्तावना से भाषणों में प्रत्यक्ष प्रवचन तक। यह धर्मशास्त्रीय जोर भी देता है क्योंकि यह इस बात पर विचार करता है कि ईश्वर क्या कर रहा है और दुनिया कैसी है। विलाप में, हम प्रस्तावना खंड में अपने उत्तरों में आत्मविश्वास से भरे अय्यूब से अब व्याकुल, प्रश्न करने वाले अय्यूब तक के विकास को देखते हैं।

इसलिए, अय्यूब अपने दुःख में आगे बढ़ रहा है और चीजों को अलग ढंग से व्यक्त कर रहा है। वह आश्वस्त है. भरोसा खत्म हो रहा है. उसे कोई उम्मीद नहीं है कि मृत्यु अनंत काल तक ले जाएगी जहां सब कुछ ठीक किया जा सकता है। इज़राइल में, बाइबिल काल में, उन्होंने अनंत काल की कोई आशा नहीं विकसित की थी, कोई इनाम और सज़ा नहीं थी। और अय्यूब एक गैर-इस्राएली होने के कारण और भी कम इच्छुक है। इसलिए, उसे कोई उम्मीद नहीं है कि मरने के बाद किसी तरह इस सबका कोई समाधान निकलेगा। वह मृत्यु की कामना करता है, समाधान के लिए नहीं बल्कि बचने के लिए। इस बिंदु पर, न तो जीवन और न ही मृत्यु, उसे कोई आशा प्रदान करती है, हालाँकि, उसके लिए, जीवन की तुलना में मृत्यु बेहतर होगी।

हम देखते हैं कि उन्होंने वह शुरू कर दिया है जो हम सभी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि हम क्यों पूछते हैं। श्लोक 11, 12, 16, 20, 23, क्यों? क्यों? क्यों? यह वह शब्द है जो हर पीड़ित व्यक्ति की जुबान पर है। क्यों? और यही कारण है कि नौकरी की पुस्तक हमें कुछ मूल्यवान चीजें प्रदान करती है। इसलिए नहीं कि यह प्रश्न का उत्तर देता है, बल्कि इसलिए कि यह हमें यह एहसास दिलाने में मदद करता है कि यह गलत प्रश्न है।

साथ ही, अय्यूब का विलाप इस बात का संकेत नहीं देता कि वह वास्तव में मानता है कि उसे जो मिला है वह उसका हकदार है। वह उस तक नहीं आया है। वह यह कहने को तैयार नहीं है कि उसने यह सब करने लायक कुछ किया है। और इसी तरह, इस तथ्य के बावजूद कि उसने क्यों प्रश्न पूछना शुरू कर दिया है और उसका विश्वास बिगड़ रहा है, वह अभी भी अपनी ईमानदारी बनाए हुए है।

अय्यूब की सत्यनिष्ठा [6:10-8:00]

अब, अय्यूब द्वारा कायम रखी गई इस सत्यनिष्ठा को समझने की आवश्यकता है। सत्यनिष्ठा अध्याय एक और दो में उनके सभी सकारात्मक वर्णनकर्ताओं के समान नहीं है। उनकी सत्यनिष्ठा को विशेष रूप से उनके इस आग्रह के रूप में परिभाषित किया गया है कि उनकी धार्मिकता अपने आप पर कायम है। वह यह है कि वह केवल लाभ का पीछा नहीं कर रहा है। उसकी धार्मिकता धार्मिकता के लिए है, न कि इससे उसे क्या प्राप्त होता है। वह अखंडता है। यही एकमात्र चीज़ है जिसे उसे बनाए रखना है। हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि अय्यूब कुछ बहुत ही अंधेरी जगहों पर जाता है कि वह ईश्वर के बारे में कैसे सोचता है। भगवान के खिलाफ उनके आरोप स्पष्ट और गलत हैं। तो, ऐसा नहीं है कि अय्यूब की प्रतिक्रिया किसी तरह से दोषरहित है। उसने जिस तरह से परमेश्वर को जवाब दिया है, उसके लिए परमेश्वर उस पर गलत कार्य करने का आरोप लगाने जा रहा है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि। मेज पर जो प्रश्न है वह महत्वपूर्ण है: क्या अय्यूब की धार्मिकता, एक निःस्वार्थ धार्मिकता है, और उस स्थिति को बनाए रखना अय्यूब की ईमानदारी है। किताब को

आगे बढ़ाने के लिए उसे बस इतना ही करना है। भगवान की नीतियों के लिए, यह महत्वपूर्ण बिंदु है।

प्रथम संवाद चक्र का परिचय [8:00-8:20]

अब वे कौन से मुद्दे हैं जिनका सामना हमें बातचीत के पहले चक्र में करना पड़ता है ? यह हमें अध्याय 4 से 14 तक ले जाता है। यह पहला चक्र है। तो, एलीपज बोलता है. अय्यूब जवाब देता है. बिलदाद बोलता है. अय्यूब जवाब देता है. ज़ोफर बोलता है. अय्यूब पहले चक्र में प्रतिक्रिया देता है, अध्याय 4 से 14।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 4:6 [8:20-10:15]

इस चक्र में कुछ महत्वपूर्ण कथन हैं। वे पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो संदेश दिया जा रहा है उसके लिए महत्वपूर्ण हैं, और प्रसिद्ध हैं, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान से देखना होगा कि हम उन्हें समझते हैं।

पहला अध्याय 4:6 में अध्याय चार, श्लोक छह में है, एलीपज बोल रहा है, और वह कहता है, "क्या तेरी धर्मपरायणता, तेरा भरोसा और तेरा निर्दोष चालचलन तेरी आशा न हो?" वह सवाल उठा रहा है कि अय्यूब को किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए। "क्या आपकी धर्मपरायणता आपका आत्मविश्वास होनी चाहिए और आपके निर्दोष तरीके आपकी आशा होनी चाहिए?" मैं इसे केवल समझ को थोड़ा विस्तारित करने के लिए प्रस्तुत करूंगा: "क्या आपकी स्व-घोषित धर्मपरायणता इस अतार्किक आत्मविश्वास का आधार नहीं है?" एलीपहाज़ का मानना है कि अय्यूब की धर्मपरायणता केवल स्व-घोषित है, और उसका विश्वास तर्कहीन और प्रमाणित नहीं है। वह सवाल पूछ रहा है: क्या आपकी एकमात्र आशा वास्तव में आपके तरीकों की कथित दोषहीनता में है? आपको मुझे और अधिक काम देना होगा; वह पर्याप्त नहीं है। तो, यह कमज़ोर नहीं है; यह पुस्तक अय्यूब की धर्मपरायणता या उसकी दोषहीनता को कम नहीं आंक रही है। एलीपज इस बात को कमज़ोर कर रहा है कि जिस तरह से अय्यूब उनके बारे में सोचता है वह पर्याप्त होगा या नहीं। यह जॉब की पुस्तक में बहुत कठिन हिब्रू का अनुवाद करने की कोशिश की कुछ जटिलताओं का एक उदाहरण मात्र है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 4:17 [10:15-14:21]

इसके अलावा, एलीपज़ के भाषण में, हमें उसके रहस्यमय अनुभव का विवरण मिलता है। यह श्लोक 12 से 21 तक है, और मैं इसे नहीं पढ़ूँगा, लेकिन आप इस पर एक नज़र डाल सकते हैं। अब यह एक दर्शन में घटित होता है कि वह इस दर्शन में रिपोर्ट करता है; वह रहस्योद्घाटन का दावा कर रहा है। वह इस आध्यात्मिक अनुभव के पूरे परिदृश्य को इस बात पर प्रकाश डालने के लिए स्थापित करता है कि वह एक महान अंतर्दृष्टि, गहरे सत्य का रहस्योद्घाटन मानता है। और वह इसे अध्याय चार के श्लोक 17 में व्यक्त करता है। एनआईवी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है; बस एक आधार के रूप में, इस पर एक नज़र डालें। यह कहता है, "क्या एक नश्वर व्यक्ति ईश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है? क्या एक शक्तिशाली व्यक्ति भी अपने निर्माता के प्रति अधिक पवित्र हो सकता है? अब एक पल के लिए इसके बारे में सोचें। "क्या एक नश्वर व्यक्ति ईश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है?" यह किस प्रकार की महान अंतर्दृष्टि है वह? क्या हर कोई यह नहीं जानता? मेरा मतलब है, इस रहस्यमय अनुभव की लंबी व्यवस्था केवल कुछ ऐसा कहने के लिए क्यों है जिसे दुनिया में हर कोई जानता है? कि एक नश्वर व्यक्ति भगवान से अधिक धर्मी नहीं हो सकता। यह एक मूर्खतापूर्ण बात लगती है कहो। अब, शायद वह यह विचार व्यक्त करने की कोशिश कर रहा है कि अय्यूब सोचता है कि वह ईश्वर से अधिक धर्मी है। यह एक संभावना हो सकती है, लेकिन हमें इस पर थोड़ा गौर करना चाहिए, सुनिश्चित करें कि हम सही हैं रास्ता। श्लोक के दूसरे भाग में यह पूछना है, "क्या कोई अपने निर्माता से अधिक शुद्ध हो सकता है"। किसी इंसान की पवित्रता की तुलना ईश्वर से करना वास्तव में संभव नहीं है क्योंकि हिब्रू में "शुद्धता" *ताहर* के रूप में अनुवादित इस शब्द का उपयोग कभी भी ईश्वर का वर्णन करने के लिए नहीं किया जाता है। ईश्वर को शुद्ध या अशुद्ध नहीं कहा जा सकता। यह एक ऐसी श्रेणी है जो भगवान पर लागू नहीं होती है। और इसलिए, अगर ईश्वर को शुद्ध नहीं माना जा सकता तो वास्तव में यह नहीं कहा जा सकता कि आप ईश्वर से अधिक शुद्ध हो सकते हैं या नहीं। इसका तात्पर्य अस्वच्छ अवस्था से प्राप्त स्वच्छ अवस्था से है। चूँकि ईश्वर कभी भी अशुद्ध अवस्था में नहीं हो सकता, इसलिए, ईश्वर

अशुद्ध अवस्था से प्राप्त स्थिति, तहर भी नहीं हो सकता। भगवान अशुद्ध नहीं हो सकते. अतः उसे पाक साफ नहीं कहा जा सकता।

अलंकारिक रूप से। यदि हम पद्य के पारंपरिक प्रतिपादन का अनुसरण करें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि एलीपज़ ने अपने मामले को ज़्यादा महत्व दिया है। यह बात स्पष्ट करने के लिए किसी रहस्यमय रहस्योद्घाटन की आवश्यकता नहीं होगी कि ईश्वर से अधिक धर्मी कोई नहीं है। और आप यह नहीं कह सकते कि कोई ईश्वर से शुद्ध या कम पवित्र है।

यहाँ मेरा वैकल्पिक वाचन है। "क्या कोई नश्वर व्यक्ति ईश्वर के दृष्टिकोण में धर्मी हो सकता है?" क्या आप परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य में धार्मिकता प्राप्त कर सकते हैं? "क्या कोई मनुष्य अपने निर्माता के दृष्टिकोण में शुद्ध हो सकता है?" एलीपज़ यहाँ निरपेक्षता पर प्रश्न उठा रहा है। क्या हममें से कोई वास्तव में उस बिंदु तक पहुँच सकता है जहाँ हम ईश्वर के दृष्टिकोण में स्वच्छ या धर्मी हों?

अब उसका अनुसरण करते हुए, एलीपज़ उस चीज़ को प्रतिध्वनित कर रहा है जिसे हम प्राचीन निकट पूर्व से अच्छी तरह से जानते हैं - हर किसी में पाप की प्रवृत्ति होती है। और वास्तव में, निस्संदेह, हम इसे ईसाई शिक्षण में भी पा सकते हैं। लेकिन यहाँ, यह विचार नहीं है कि आप ईश्वर से अधिक धर्मी नहीं हो सकते।

अब, मेरे लिए उस रीडिंग को प्रदर्शित करना जो मैं प्रस्तुत करता हूँ, विस्तृत हिब्रू कार्य की आवश्यकता है, और मुझे यह मेरी टिप्पणी में मिला है जिसे मैंने प्रकाशित किया है यदि लोग इसे समझ सकें, तो वे उपचार का पूरा विवरण देख सकते हैं।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 7:17 [14:21-18:44]

एक और कथन जो हमें मिलता है वह कुछ प्रश्न लाता है आइए अध्याय सात के बारे में एक मिनट के लिए सोचें। हम अय्यूब के भाषण में हैं। अब, एलीपज़ को अय्यूब की प्रतिक्रिया। और अध्याय सात में, छंद 7 से 21 सबसे मार्मिक हैं जो अय्यूब ने पेश किए हैं। जब वह जीवन की क्षणभंगुरता के बारे में बात करते हैं तो वह हमें कुछ सभोपदेशक की याद दिलाते हैं।

तो, हम पढ़ते हैं, "याद रखें, हे भगवान, कि मेरा जीवन बस एक सांस है। मेरी आंखें फिर कभी खुशी नहीं देख पाएंगी।" वह उस बारे में बात करना जारी रखता है। और वह कहते हैं, "मैं चुप नहीं

रहूंगा." इसलिए, श्लोक 11 में, "मैं अपनी आत्मा की पीड़ा में बोलूंगा। मैं अपनी आत्मा की कड़वाहट में शिकायत करूंगा। क्या मैं समुद्री राक्षस हूँ?" क्या मैं दुश्मन हूँ? वह यही तो पूछ रहा है. "तुम्हें मुझ पर पहरा देना होगा। जब मैं सोचता था कि मेरा बिस्तर मुझे आराम देगा और मेरा सोफ़ा मेरी शिकायत को कम कर देगा, तब भी तुमने मुझे सपनों से डरा दिया ताकि मैं गला घोटना और मौत पसंद करूँ। मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ। मुझे अकेला रहने दो .मेरे दिनों का कोई मतलब नहीं है।"

तब बाइबल से परिचित पाठक श्लोक 17 तक पहुँचेंगे और एक बहुत ही रोचक, परिचित पंक्ति देखेंगे। "मानवजाति क्या है जो तुम उन्हें इतना बनाते हो?" धर्मग्रंथ का चौकस पाठक भजन 8 की पंक्ति को तुरंत पहचान लेगा, जहां यह बहुत सकारात्मक बात है। देखो तुमने क्या किया है. आपने हमें स्वर्गदूतों से थोड़ा ही नीचे बना दिया है। हम क्या हैं कि आपने हमें इतना बड़ा बना दिया है? लेकिन अय्यूब ने इसे उल्टा कर दिया। और वह कहता है, "आप हम पर इतना ध्यान क्यों देते हैं? पूरे सम्मान के साथ, कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।"

तो, वह कहते हैं, मानव जाति क्या है कि आप उन्हें इतना बनाते हैं और उन पर इतना ध्यान देते हैं? और वह विस्तार से बताता चला जाता है। "आप हर सुबह उन्हें जांचते हैं, हर पल उनका परीक्षण करते हैं। क्या आप कृपया मुझसे नज़रें फेर लेंगे?" फिर, भजनहार से बहुत अलग, जो ईश्वर की दृष्टि को आमंत्रित करता है, जो ईश्वर को देखने और जांचने के लिए आमंत्रित करता है। अय्यूब के लिए, यह है, "कृपया दूसरी ओर देखें। मुझे अवकाश की आवश्यकता है। यदि मैंने पाप किया है," और निश्चित रूप से, अय्यूब यह सुझाव नहीं देता है कि उसने ऐसा किया है, लेकिन यदि ऐसा होता भी, "आपको इससे क्या? क्यों? क्या तुमने मुझे अपना लक्ष्य बना लिया है? मैं बोझ क्यों बन गया हूँ? इससे छुटकारा पाओ।"

तो, हम देख सकते हैं कि अय्यूब के भाषणों में यह सच है। वह वास्तव में दोस्तों को संबोधित करने के बजाय अपना ध्यान ईश्वर की ओर केंद्रित कर रहा है। यहां उन्होंने भगवान पर उनकी अपेक्षाओं के प्रति अत्यधिक चौकस और अवास्तविक होने का आरोप लगाया है। क्या इससे कोई घंटी बजेगी? अध्याय एक, श्लोक चार और पाँच याद रखें। परमेश्वर की अपेक्षाएँ क्या हैं? क्या ईश्वर अत्यधिक

ध्यानशील है? इसीलिए अय्यूब अपने बेटे-बेटियों के लिए यह सब अनुष्ठान करता है। और इसलिए यहाँ, यह सामने आ रहा है।

एक अराजक प्राणी के विपरीत, अय्यूब का दावा है कि वह व्यवस्था के लिए कोई खतरा नहीं है। वह निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं रखता। वह ईश्वर को "मनुष्यों का देखने वाला" कहता है। वह एक ऐसे शब्द का उपयोग करता है जिसका अक्सर सकारात्मक अर्थ होता है जो देखभाल और सुरक्षा का संकेत देता है। लेकिन फिर, वह इसे उल्टा कर देता है। अय्यूब अपने आप को पहले से ही मुक़दमे के दौर से गुजर रहा है, पहले से ही सज़ा भुगत रहा है। वह संघर्ष विराम के आदेश का अनुरोध करता है कि भगवान उसे अकेला छोड़ दें। उनका मानना है कि, किसी तरह मुक़दमा पहले ही हो चुका है और दोषी फैसला सुनाया जा चुका है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 7:20 [18:44-19:31]

पद 20 में। यह कहने के बजाय, "यदि मैंने पाप किया है," मुझे नहीं लगता कि हमें इसे इस तरह पढ़ना चाहिए। नौकरी उस संभावना को टिकने ही नहीं दे रही है। मैं इसे पढ़ूँगा, "मैंने पाप किया है।" परन्तु उसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि मैं किसी प्रकार आपके पक्ष से बाहर हो गया हूँ, इसलिए आपने मेरे विरुद्ध कार्य किया है। मैंने आपके साथ जो कुछ भी किया होगा, आपने जो कुछ भी किया है और जिसे आपने दोषारोपण योग्य माना है, उसे आप क्षमा क्यों नहीं करेंगे? आपने मुझ पर जो भी अपराध किया है, जिसका दंड आप मुझे दे रहे हैं, मुझे क्षमा करें। उस काल्पनिक क्षेत्र में अय्यूब की बातचीत इस बात से संबंधित है कि ईश्वर उसके साथ कैसा व्यवहार कर रहा है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 13:15 [19:31-22:31]

एक और श्लोक. मैं देखना चाहता हूँ; इसे कुछ विस्तार से; यह अध्याय 13 में है। यह अय्यूब की पुस्तक का एक प्रसिद्ध पद है। और फिर, यह अय्यूब बोल रहा है। और पारंपरिक अनुवाद है "यद्यपि वह मुझे मार डालता है, मैं उस पर आशा रखूँगा।" जब हम देखते हैं कि अनुवादों और टिप्पणियों ने इसके साथ कैसा व्यवहार किया है, तो हमें अनुवाद में व्यापक विविधता दिखाई देती है। उनमें से एक में लिखा है, "देखो। वह मुझे मार डालेगा। मुझे कोई उम्मीद नहीं है।" बहुत खूब। यह "हालाँकि वह मुझे मार डालता है, फिर भी मैं उस पर आशा रखूँगा" से बहुत अलग है। यह एक

वैकल्पिक हिब्रू पढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है। वह केटिव जिसमें "उसमें" के स्थान पर निषेध है। वे दोनों एक जैसे लगते हैं लो(उसे) और लो(नहीं)। और इसलिए, मैं "उससे" आशा करूँगा या "मुझे कोई आशा नहीं है।" फिर, यह पूरी चीज़ को पलट देता है।

एक अन्य टिप्पणी में लिखा है. "अगर वह मुझे मार डाले, तो मुझे कोई उम्मीद नहीं रहेगी।" "यदि तुम मुझे मार डालो," अन्य दो को याद रखें, "देखो, वह मुझे मार डालेगा" या "यद्यपि उसने मुझे मार डाला।" तो, आप देख सकते हैं कि हम उस हिब्रू कण के साथ काम कर रहे हैं और वास्तव में इसका क्या मतलब है। "अगर वह मुझे मार डालता, तो मुझे कोई उम्मीद नहीं होती," यह सुझाव देते हुए कि उसने अभी तक ऐसा नहीं किया है। तो, आशा का कारण अभी भी है।

यहां हम पूरा प्रश्न देख सकते हैं। क्या उसे आशा है, या नहीं? तीन अन्य टिप्पणीकार हैं जो पढ़ने पर सहमत हैं। "हाँ," "यदि," "देखो," या "यद्यपि" नहीं। "हाँ, हालाँकि वह मुझे मार डालता है। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा।" आह, यह उस शब्द की एक अलग समझ है जिसका अनुवाद "आशा" है। वे हिब्रू में "आशा" और "प्रतीक्षा" बहुत करीब लगते हैं। और इसलिए, वे इसे अलग तरह से पढ़ रहे हैं। "मैं प्रतीक्षा नहीं करूँगा," अर्थात्, "मैं चुपचाप प्रतीक्षा नहीं करूँगा।"

ठीक है। मैं थोड़ा अलग तरीका अपनाऊँगा। मैं उसके पिछले हिस्से से सहमत होऊँगा, लेकिन मैं इसका अनुवाद करूँगा, "भले ही वह मुझे मार डाले। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा।" मैं इसे अय्यूब द्वारा ईश्वर के विरुद्ध बहस करने के अपने इरादे को व्यक्त करने के रूप में देखता हूँ। एलीपज ने उस से कहा, तू जानता है, तू वहां नहीं जाना चाहता। तुम अंदर जाओ और भगवान से बहस करना शुरू करो। इससे कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता. आप ऐसा नहीं करना चाहते. अय्यूब एक तरह से खुद को साहस से लैस कर रहा है और कह रहा है, "भले ही वह मुझे इसके लिए मार डाले, मैं यह करने जा रहा हूँ। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा। मैं अपना दावा करने जा रहा हूँ।" तो इस तरह मैं इसे पढ़ूँगा। फिर, एक बहुत ही कठिन कविता, और इसमें क्या कहा गया है इसके बारे में विभिन्न टिप्पणीकारों और अनुवादकों के अलग-अलग विचार हैं।

प्रथम संवाद चक्र का सारांश [22:31-23:00]

आइए पहले चक्र में दिए गए तर्कों को संक्षेप में प्रस्तुत करें। जब हम पुस्तक की अलंकारिक रणनीति पर पहुंचते हैं, तो हम जो पूछना चाहते हैं वह यह है: प्रत्येक भाषण बातचीत में क्या योगदान देता है? फिर, हम यह मान रहे हैं कि ये यहाँ केवल पुष्पमय, काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के लिए नहीं हैं। जैसे-जैसे किताब का मामला आगे बढ़ रहा है, वे कुछ हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। तो, आइए प्रत्येक को संक्षेप में प्रस्तुत करें, और आप देख पाएंगे कि वे कैसे काम करते हैं।

एलीपज का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [23:00-24:40]

तो, चक्र एक में एलीपज का भाषण: मैं इसे इस तरह संक्षेप में प्रस्तुत करूंगा। आपने कई लोगों को सलाह दी है जो उसी तरह की परिस्थितियों में हैं जैसे आप अभी हैं। आपको अपनी सलाह खुद लेनी चाहिए। अपनी धर्मपरायणता पर भरोसा रखें। प्रतिशोध सिद्धांत कायम रहेगा। यह दुष्ट ही हैं जो नष्ट हो जाते हैं फिर भी ईश्वर के दृष्टिकोण से, कोई भी नश्वर व्यक्ति धर्मी नहीं है। ईश्वर से अपील करें, उसके अनुशासन को छोड़कर। वह एलीपज का पहला भाषण है।

अय्यूब की प्रतिक्रिया को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। मेरे दुख की सीमा मेरे आक्रोश को उचित ठहराती है। काश वह मुझे मौत की सज़ा दे देता। तब मैं इस तसल्ली के साथ मर जाऊंगा कि कम से कम मैंने स्थिति का वास्तविक आकलन तो कर लिया। मैं बहुत असहाय महसूस करता हूं। मुझे यकीन नहीं है कि मैं जारी रख सकता हूं, और मेरे दोस्त कोई मदद नहीं कर रहे हैं। मुझे खुशी होगी अगर भगवान मुझे कुछ दिखाएंगे कि मैंने क्या गलत किया है। मेरे दुख भरे दिन जल्द ही खत्म हो जायेंगे। तो, मैं भी अपने मन की बात कह सकता हूं। हे भगवान, आपने मुझे इतना ध्यान क्यों दिया? कोई भी इस तरह की जांच बर्दाश्त नहीं कर सकता। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, क्या आप कुछ सहनशीलता नहीं दिखा सकते? यह अय्यूब का पहला भाषण है जिसका सारांश सामान्य रूप से दिया गया है।

तब एलीपज की सलाह यह थी कि परमेश्वर से प्रार्थना करो और अपना अपराध स्वीकार करो।

अय्यूब का उत्तर: झूठी विनम्रता और मनगढ़ंत अपराधों के साथ ईश्वर से अपील करने के बजाय मुझे

दोषी मानना बंद करो; मैं प्रतिशोध की मांग के साथ उसका सामना करूंगा। और इस प्रकार, अय्यूब अपने रास्ते पर चल पड़ता है।

बिलदाद का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [24:40-26:23]

चक्र एक में, बिलदाद के दूसरे भाषण को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। आपकी यह कहने की हिम्मत कैसे हुई कि ईश्वर न्याय को विकृत कर देता है। याद रखें, बिलदाद युगों के ज्ञान का प्रवक्ता है। आपकी यह कहने की हिम्मत कैसे हुई कि ईश्वर न्याय को विकृत करता है? आपके बच्चों ने निःसंदेह पाप किया है। मेरा मतलब है, यह एक दिया हुआ है। यदि वे सभी इस तरह से मरे, तो निस्संदेह, उन्होंने पाप किया। तथ्यों का सामना करें, स्पष्ट होकर सामने आएं, फिर यह आपके लिए आसानी से हो जाएगा। पारंपरिक ज्ञान आपको वह सारी जानकारी देता है जिसकी आपको आवश्यकता है - प्रतिशोध सिद्धांत: दुष्ट नष्ट हो जाते हैं, लेकिन भगवान किसी धर्मी व्यक्ति को अस्वीकार नहीं करते हैं। वापस आओ, अय्यूब, अपना सामान वापस ले आओ।

बिल्डैड के प्रति अय्यूब की प्रतिक्रिया को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कोई भी कभी भी परमेश्वर के सामने अपनी धार्मिकता कैसे स्थापित कर सकता है? आप उससे बहस नहीं कर सकते और जीतने की उम्मीद नहीं कर सकते। उसे चुनौती देना सचमुच विनाशकारी होगा। वह इतना ताकतवर है कि उस पर काबू पाना संभव नहीं है। और वह हिसाब माँगने से परे है। मेरे पास जीने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। तो, मैं इसे सीधे तौर पर भी कह सकता हूँ। वह बस नहीं है। निर्दोष और दुष्ट दोनों नष्ट हो जाते हैं। काश मेरी ओर से बोलने के लिए कोई वकील होता। मान लीजिए कि कोई केवल मेरी ओर से बोल सकता है। किसी का भी कुछ मतलब नहीं। मैं जीत नहीं सकता। काश भगवान मुझे मरने ही देते। यह अय्यूब की प्रतिक्रिया का सारांश है।

इसलिए बिलदाद की सलाह थी कि पारंपरिक दृष्टिकोण अपनाया जाए। प्रतिशोध सिद्धांत अपरिहार्य निष्कर्ष को गंभीरता से पहचानता है। अय्यूब का उत्तर: मैं जानता हूँ कि परंपराएं सत्य हैं, लेकिन मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि निष्कर्ष अपरिहार्य हैं। फिर भी मैं बिना किसी सहारे के हूँ।

ज़ोफ़र का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [26:23-28:00]

हम ज़ोफ़र पहुँचते हैं। ज़ोफ़र, याद रखें वह काला और सफ़ेद है। कैसा अहंकार? क्या तुम्हें लगता है कि तुम इतने पवित्र हो? ठीक है, आपको अभी तक वह मिलना शुरू भी नहीं हुआ है जिसके आप वास्तव में हकदार हैं। आपकी समझ ईश्वर की तुलना में बहुत छोटी है। हार मान लेना। अपने पाप का पश्चाताप करें ताकि आपके लिए सब कुछ अच्छा हो सके। ज़ोफ़र चीज़ों को बहुत काले और सफ़ेद रूप में देखता है।

ज़ोफ़र को अय्यूब की प्रतिक्रिया। "तुम, मेरे दोस्तों, मेरा मज़ाक उड़ाते हो। काश तुम चुप रहकर अपनी बुद्धिमत्ता दिखाते। तुम कोई सांत्वना देने वाली सलाह नहीं देते और परमेश्वर की ओर से अभिमानपूर्वक और अज्ञानतापूर्वक बोलते हो। मैं कष्ट उठाता हूँ जबकि दुष्ट बच निकलते हैं। परमेश्वर ही सबका स्रोत है बुद्धि और शक्ति। अगर मैं अपना मामला उनके सामने ला पाता, तो मुझे लगता है कि मेरे पास एक पुख्ता बचाव होता। हालांकि, मैं अनुरोध करूँगा कि वह मामले का निपटारा होने तक पीड़ा और भय से दूर रहें। ऐसी रोक दी गई है, मैं अपने मामले पर ध्यान केंद्रित कर सकता हूँ। मुझे अपने गलत काम का सबूत दिखाओ। मेरे पास यही जीवन है। इसलिए, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, मैं इसे निपटाना चाहता हूँ।

तो, ज़ोफ़र की सलाह, संक्षेप में, अपना हृदय ईश्वर को समर्पित करो, पाप को दूर करो। अय्यूब का उत्तर. आप भगवान और मुझे दोनों को बुरी तरह से गलत तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे आशा है कि मरने से पहले मैं अपनी सुनवाई प्राप्त कर सकूँगा और ईश्वर के साथ अपना रिश्ता बहाल कर सकूँगा।

प्रथम संवाद चक्र का समापन [28:00-28:50]

तो, निष्कर्षतः, यह चक्र एक का हमारा सारांश है। इस पहली श्रृंखला में, प्रत्येक मित्र का भाषण धार्मिकता के लाभों की एक गुलाबी तस्वीर चित्रित करने के साथ समाप्त होता है। इस श्रृंखला का मुख्य फोकस यह है कि मित्र अय्यूब से अपने लाभ वापस पाने के बारे में सोचने और उसे पूरा करने के लिए जो भी आवश्यक हो वह करने की अपील करते हैं। यह सब सामान के बारे में है। श्रृंखला तब समाप्त होती है जब अय्यूब यह स्पष्ट कर देता है कि उसे पुनर्स्थापना की कोई उम्मीद नहीं है

और वह उस इच्छा से प्रेरित नहीं है जिसे उसके दोस्तों ने सर्वोच्च मूल्य के रूप में रखा है। और वह हमें चक्र दो में ले जाता है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 13, संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14 है। [28:50]